GOVT. OF INDIA RNI NO.: UPBIL/2015/62096

UGC Approved Care Listed Journal

ISSN
2229-3620

SPB

SHODH SANCHAR
Bulletin

An International
Multidisciplinary
Quarterly Bilingual
Peer Reviewed
Refereed
Research Journal

Vol. 11

Issue 41

January to March 2021

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sancHar
Educational & Research Foundation

41.	मिथिलाचंल के हिन्दी साहित्य में राम	डॉ0 गीता पंत	211
42.	भारत में राष्ट्रवाद के उत्थान की प्रक्रिया एवं प्रासंगिकता : एक ऐतिहासिक विश्लेषण	नरेश कुमार	214
43.	महात्मा गाँधी जी के शिक्षा–दर्शन एवं बुनियादी सिद्धान्त	सोना राम वर्मा पुनीता रंजन	219
44.	प्राचीन भारतीय दर्शन और पर्यावरणीय चिंतन	डॉ0 संदीप कुमार मिश्रा	223
45.	अध्यापक शिक्षा में शोध की आवश्यकता	शोभनाथ यादव	226
46.	स्त्री अस्मिता, मीडिया और बाजार	डॉ0 नगमा खानम	229
47.	माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन	रमेश चन्द्र सिंह राणा डॉ. डी. एस. गडिया	234
48.	राजस्थानी संस्कृति में प्रचलित लोक गीतों की शैक्षिक उपयोगिता का अध्ययन	सुरेन्द्र सिंह डॉ. रमा शर्मा	238
49.	बिरसा धर्म से बिरसा आंदोलन तक	डॉ0 अवन्तिका कुमारी	242
50.	आचार्य नागार्जुन की जीवन–दृष्टि	डॉ0 अनामिका सिंह	246
51.	गोपाल दत्त भट्ट जी की रचनाओं में रस योजना	डॉ0 विनोद कुमार सिंह बिष्ट	250
52.	'लोकधर्म' दशकुमारचरितम् के सन्दर्भ में	डॉ0 मीनू वर्मा	255

ISSN - 2229-3620
UGC CARE LISTED JOURNAL
SPB
शोध संचार
बुलेटिन
January-March, 2021
Vol. 11, Issue 41
Page Nos. 229-233
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

स्त्री अस्मिता, मीडिया और बाजार

डॉ0 नगमा खानम*

शोध सारांश

20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में विश्व में उदित महिलावादी आन्दोलनों से यह आशा जगी थी कि 21वीं सदी में किसी भी क्षेत्र में शेषकर सार्वजनिक क्षेत्रों में महिलाओं को किसी भी प्रकार के शोषण का सामना नहीं करना पड़ेगा, लेकिन अभी भी महिलाओं की थिति में आशानुरूप सुधार दिखाई नहीं पड़ता। सार्वजनिक मीडिया बाजार से प्रभावित है और बाजार पुरुषसत्तावादी विचारधारा से, सका महिलाओं की श्रम में समतापूर्ण व न्यायपूर्ण भागीदारी व पहचान पर व्यापक रूप से प्रभाव पड़ता है।

ywords : महिला सशक्तिकरण, महिला संवेदनशीलता, श्रम, भागीदारी, अस्मिता–संकट, महिलावाद।

तावना

समाज का आधा हिस्सा यानी महिलाएं, इनका अतीत, ज और कल, इनकी जिंदगी की आकांक्षाएं, तमन्नाएं, संघर्ष, ख और पीड़ाएं इन सब पर कुछ बातचीतः कोई भी यह सवाल ा सकता है कि अलग से महिलाओं पर बातचीत क्यों? लेकिन छ तो, कुछ क्या बहुत कुछ ऐसा जुड़ा है इनकी जिंदगी से जो लग से इनके बारे में सोचने, बातचीत करने के लिए मजबूर ही ी करता बल्कि जरूरी भी लगता है। अलग से बातचीत करने मतलब पूरे समाज की परिस्थितियों से हटकर बातचीत करना नहीं है, क्योंकि जो सुख, दुख, अपमान और स्त्री–अस्मिता पर चोट है वह इस समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, नैतिक व्यवस्थाओं की ही देन है।

स्त्री को अपनी अस्मिता, अपनी देह और अपने व्यक्तित्व बचाए रखने के लिए जबरदस्त संघर्ष करना पड़ता है। जब भी ाज के बीच घुटती जिंदगी से सोच और तमन्नाएं दिल से बाहर ई तब तक चाहे वह व्यवस्था हो, घर हो या बाहर हो वह ित हुई, निष्कासित हुई, विद्रोही करार ठहरा दी गईं। 1960 शक में उपजे महिलावादी राजनीतिक आंदोलनों ने भारतीय ला बुद्धिजीवी वर्ग को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया। च, 2015) केन्द्र व राज्य विधायिकाओं में पुरुषों का प्रभुत्व के बावजूद सोचने, विचारने, संघर्ष करने का काम स्त्रियों ने ी रखा और पहली बार 2019 में गठित 17 वीं लोकसभा में लाओं ने 15 फीसदी से भी अधिक सीटों पर कब्जा जमाया के साथ ही विभिन्न राज्यों के स्थानीय निकायों में भी महिलाओं के प्रतिनिधित्व में तेजी से वृद्धि होती दिख रही है।

किसी भी समांज में महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए जरूरी है कि हम इनके द्वारा किए जा रहे कार्यो व समाज में उनकी स्थिति के आपसी संबंधों को समझें कि यह किस प्रकार उनके स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। दिल्ली स्थित एक संस्था सेंटर फॉर साइंस एंड एजुकेशन द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'डाउन टू अर्थ' की एक रिपोर्ट के मुताबिक– पहाड़ में श्रम घंटों के विभाजन में महिलाएं 59 प्रतिशत, बच्चे 26 प्रतिशत तथा पुरुष 15 प्रतिशत भागीदारी निभाते हैं। एक महिला के दिन भर के काम में से 8 घंटे जंगल व खेत, 4 घंटे जानवर, 3 घंटे घर के काम, 2 घंटे बच्ची व 1 घंटे पति की देखभाल मे जाता है। इस प्रकार एक महिला दिन में औसतन 17–18 घंटे काम करती है।

तथ्य यह है कि लिंग के आधार पर श्रम–विभाजन के पीछे कोई प्राकृतिक या जैविक असमानता नहीं है बल्कि इसकी जड़ में कुछ विचारात्मक मान्यताएं हैं। परंपरागत रूप से राजनीति, व्यवसाय, कला एवं साहित्य को सार्वजनिक क्षेत्र में स्वीकार करते हुए भी पुरूषों के लिए उपयुक्त माना गया है, (एलेस्टीन, 1981) जबकि स्त्रियों को निजी क्षेत्र के लिए उपयुक्त मानते हुए उन्हें घरेलू जिम्मेदारियों के लिए छोड़ दिया गया है। इसलिए एक तरफ तो स्त्रियों को शारीरिक रूप से कमजोर और बाहरी शारीरिक श्रम के लिए अनुपयुक्त माना जाता है वहीं दूसरी ओर घर के भीतर और बाहर सबसे भारी काम वही करती हैं, जैसे कि बड़े–बड़े गठ्ठर ढोना, चक्की में अनाज पीसना, धान की रोपाई, खदानों और निर्माण कार्यों में ईंट गारे और दूसरे वजनों को सिर

*गेस्ट प्रोफेसर – राजनीति विज्ञान विभाग, दयानंद वैदिक कॉलेज, उरई, जालौन (उत्तर प्रदेश)